

४. प्रभात

- भारतभूषण अग्रवाल

फूटा प्रभात, फूटा विहान,
बह चले रश्मि के प्राण, विहग के गान, मधुर निर्झर के स्वर
झर-झर, झर-झर ।

प्राची का यह अरुणाभ क्षितिज,
मानो अंबर की सरसी में
फूला कोई रक्तिम गुलाब, रक्तिम सरसिज ।

धीर-धीरे,
लो, फैल चली आलोक रेख
धुल गया तिमिर, बह गई निशा;
चहुँ ओर देख,
धुल रही विभा, विमलाभ कांति ।
अब दिशा-दिशा
सस्मित, विस्मित,
खुल गए द्वार, हँस रही उषा ।

खुल गए द्वार, दृग, खुले कंठ,
खुल गए मुकुल ।
शतदल के शीतल कोषों से निकला मधुकर गुंजार लिए
खुल गए बंध, छवि के बंधन ।

जागो जगती के सुप्त बाल !
पलकों की पंखुरियाँ खोलो, मधुकर के अलस बंध
दृग भर
समेट तो लो यह श्री, यह कांति
बही आती दिगंत से,
यह छवि की सरिता अमंद
झर-झर, झर-झर ।

परिचय

जन्म : १९१९, मथुरा (उ.प्र.)

मृत्यु : १९७५

परिचय : भारतभूषण अग्रवाल छायावादोत्तर हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। आप अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। आपने आकाशवाणी तथा अनेक साहित्यिक संस्थाओं में सेवा की है। आप साहित्य अकादमी के उपसचिव थे।

प्रमुख कृतियाँ : 'छवि के बंधन', 'जागते रहो', 'ओ अप्रस्तुत मन', 'अनुपस्थित लोग', 'फूटा प्रभात', 'समाधि लेख' आदि।





फूटा प्रभात, फूटा विहान,
छूटे दिनकर के शर ज्यों छवि के बहनि बाण
केशर फूलों के प्रखर बाण
आलोकित जिनसे धरा
प्रस्फुटित पुष्पों के प्रज्वलित दीप,
लौ भरे सीप ।

फूटीं किरणें ज्यों बहनि बाण, ज्यों ज्योति-शल्य,
तरुवन में जिनसे लगी आग ।
लहरों के गीले गाल, चमकते ज्यों प्रवाल,
अनुराग लाल ।

— ० —

पद्य संबंधी

प्रस्तुत नई कविता में भारतभूषण अग्रवाल ने सूर्योदय एवं प्रातःकाल का बड़ा ही मनोरम दृश्य उपस्थित किया है । दिनकर का आगमन होते ही फूल-पौधे, प्राणी-पक्षी वातावरण में होने वाले परिवर्तनों का कवि ने बहुत ही मनोरम वर्णन किया है । यहाँ रचना की चित्रात्मक शैली दर्शनीय है ।

कल्पना पल्लवन

‘प्रत्येक सुबह नई आशाएँ लेकर आती है,’ स्पष्ट करो ।

शब्द वाटिका

विहान = भोर, प्रातःकाल

अरुणाभ = लाल आभा से युक्त

क्षितिज = वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं

रक्तिम = लाल रंग का

सरसिज = कमल

विमलाभ = निर्मल

मुकुल = कली

अलस = आलसी, सुस्त

दिगंत = दिशा का अंत, क्षितिज

शल्य = वेदना

प्रवाल = नया एवं मुलायम पत्ता, कोंपल

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) कृति पूर्ण करो :

प्रभात में ये खुल गए
↓
↓
↓
↓

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. निर्झर	-----	रक्तिम
२. गुलाब	-----	दीप
३. दिशा	-----	पुष्प
४. प्रस्फुटित	-----	सस्मित
५. प्रज्वलित	-----	मधुर
		पंखुरियाँ

(३) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखो:

१. पूर्व = -----
२. कली = -----
३. बाण = -----
४. आँखें = -----

(६) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :

शतदल के -----
----- ।
----- !
----- दृग भर

(४) कविता में प्रयुक्त तुकांत शब्द लिखो ।

(५) कविता में आया हुआ प्रभात का वर्णन करो ।

(७) निम्न शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द रिक्त स्थान में लिखो :

----- क्षितिज, ----- गुलाब,
----- कांति, ----- पुष्प,
----- दीप, ----- गाल
----- प्रवाल

(८) कविता से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का भावार्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

असफलता सफलता की राह पर ले जाती है ।



भाषा बिंदु

निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग/प्रत्यय लगाकर लिखो :

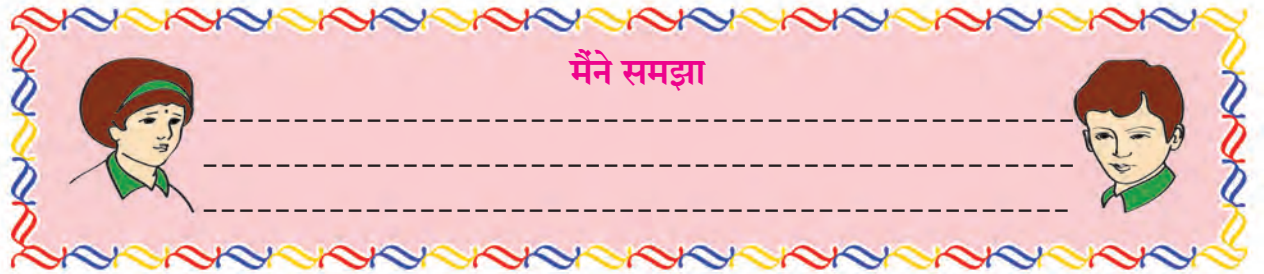
उपसर्ग युक्त शब्द

प्रत्यय युक्त शब्द

शाश्वत =	राग =	आलोक =	समझ =
संदेह =	स्मरण =	पत्थर =	दया =
जन्म =	रस =	समय =	दूध =
रिक्त =	देश =	गरम =	प्यास =

उपयोजित लेखन

रात और दिन के बीच का संवाद लिखो ।



स्वयं अध्ययन

प्रस्तुत कविता का आशय स्पष्ट करने वाला चित्र बनाओ तथा उसमें रंग भरो ।